हिन्दी विभाग

माँ

जब आँख खुली तो अम्मा की गोदी का एक सहारा था,
उसका नन्हा सा आंचल मुझको, धरती से भी प्यारा था।
चेहरे की झलक देखकर, चेहरा फूलों सा खिलता था,
उनके हर लफ्ज से मुझको सुकून मिलता था।
मैं राजा बेटा था उनका, वो आँख का तारा कहती थी,
मैं बनूं बुढ़ापे का सहारा, सिर्फ एक बात वह कहती थी।
ऊंगली पकड़ चलाया था, पढ़ने स्कूल भेजा था,
मेरी नादानी को भी निज अन्तर में सदा सहेजा था।
मेरे सारे प्रश्नों का वो फौरन जवाब बन जाती थी,
मेरी राहों के काटें चुन वो खुद गुलाब बन जाती थी।
तरस गया उस माँ के आँचल के लिए जिस आँचल में मैं खेला था।
सारी दुनिया से खुद लड़ वह हमको आँचल में सहेजा था।

प्रखर पाण्डेय
कक्षा 11वीं 'ब' साइंस
Adm. No. – DPS-JC/1217

भारत को स्वर्ग बनाएंगे

एकता के मूलमंत्र से भारत को स्वर्ग बनाएंगे,
ईश्वर अल्ला एक है, यह सबको पाठ पढ़ाएंगे।
प्रगति के हर क्षेत्र में भारत को आगे बढ़ाएंगे,
आतंकवाद को दूर भगाकर शांति का ध्वज फहराएंगे।
गौतम, गांधी के आदर्शो को, हम हृदय से अपनाएंगे,
एक बार हम इस वसुंधरा पर, राम राज्य फिर लाएंगे।

आकांक्षा सिंह
कक्षा 7वीं 'ब'
Adm. No. DPS-JC/115

माँ

जिसने हमको जन्म दिया
वह माँ कहलाती है।
हमारा पोषण करती है,
खुद भूखी रह जाती है।
अच्छी बातें हमे बताती हैं,
झूठ से दूर रखती है।
और सच्चा हमें बनाती है,
वह माँ कहलाती है।
वह माँ कहलाती है।।

विष्णु मंडल
कक्षा 8वीं 'अ'
Adm. No.DPS-JC/420

मेरी माँ

जैसे–जैसे होती है रात,
मन में होती है घबराहट।
अगर ये रात न होती,
तो घबराहट न होती।
कहानी सुनाते–सुनाते,
नींद आ जाती है।
जब आँख खुलती है,
तो वह एक अपना होता है।
माँ कहीं नहीं होती है,
अगर सुबह होती है,
तो माँ मेरे पास ही होती है।

शुभी अग्रवाल
कक्षा 6वीं 'ब'
Adm. No.-DPS-JC/165

योग से भागे रोग

दोस्तों स्वस्थ, सेहदमंद और फिट रहने का एक बहुत ही अच्छा जरिया है योग। 21 जून को 'इंटरनेशनल योग डे' के रूप में मनाते हैं।

योग क्या है?

योग एक बहुत पुरानी जीवन पद्धति है। रोज योग करने से हम बीमारियों से दूर रहते है। रोजाना नियमित रूप से योगाभ्यास करने से शरीर चुस्त, तंदरूस्त और स्वस्थ रहता है।

योग करने से फायदे :–

- बीमारियों से बचाता है।
- विश्वास बढ़ाता है।
- इम्यून सिस्टम ठीक रखता है।
- डिप्रेशन दूर करता है।
- एकाग्रता बढ़ाता है।
- पॉजिटिव थिंकिंग लाता है।

तेजश्वरी सिंह
कक्षा 4वीं 'ब'
Adm. No.
DPS-JC/1020

पहेलियाँ

1. विटामिन रस दे ताजगी,
खाते लोग तमाम।
प्यारा फल–फलों का राजा,
खाओ, बताओ नाम।

2. रोग – औषधि पेय प्राकृतिक,
गुड़ चीनी का दाता।
नाम बताओ रस पीकर जिसका,
मजा बहुत हमें आता।

3. उसके जैसे फल दुनियॉ में,
कहीं मिले न दूजा।
नाम बतावें आप भी खावें,
खाते सेठ सलूजा।

4. गर्मी में खलती है सबको,
जाड़े में मन आती।
दिन हो रोशन, ऊर्जा देती,
बोलो क्या कहलाती ?

5. ग्रीनविच भारत का कहते,
नगर–नदी तट धाम।
कर्क रेखा जहाँ से निकले,
शहर कौन कहो नाम ?

6. चलता जीवन दोनों से है,
दोनों तत्व महान।
कहो तत्व वे कौन से,
मिले न जावे प्राण ?

तेजश्वरी सिंह
कक्षा 4वीं 'ब'
Adm. No. - DPS-JC/1020

पापा

पापा आप मेरी हँसने की वजह हो,
जब भी संकट में रहता,
आप ही मेरी मदद करते।
मेरे बचपन के खिलौने,
का माध्यम है आप।
मेरे चेहरे की मुस्कान हैं आप,
आप भगवान का स्वरूप।
जिसने सही राह पर चलना सिखाया,
आपकी मार व डॉट में प्यार की मिश्री है।
मेरे अकेलेपन के साथी भी आप है,
आप व माँ से ही जीवन का रंग है।
आप ने ही मुझे इन्सान बनाया।

आर्ची पालीवाल
कक्षा 6वीं 'ब'
Adm. No. - DPS-JC/228

मेरी माँ

भगवान के सारे तोहफे में,
सबसे अच्छी होती है माँ।
एक परिवार की खुशियाँ होती है माँ,
एक बच्चे की मुस्कान होती है माँ।

उनका मन हमेशा शांत,
और चेहरे पर एक प्यारी मुस्कान।
उन्हे देखकर ऐसा लगता,
जैसे कोई चमकता चाँद।

हमेशा मेरी मदद करती,
जब भी मेरी जरूरत होती।
हमेशा मेरे पास होती,
जब भी उन्हे याद करती।

हमेशा जीतना सिखाया,
तारा सा चमकना सिखाया।
हमेशा हँसना सिखाया,
आगे आगे बढ़ना सिखाया।

भूमि पालीवाल
कक्षा 6वीं 'ब'
Adm. No. - DPS-JC/144

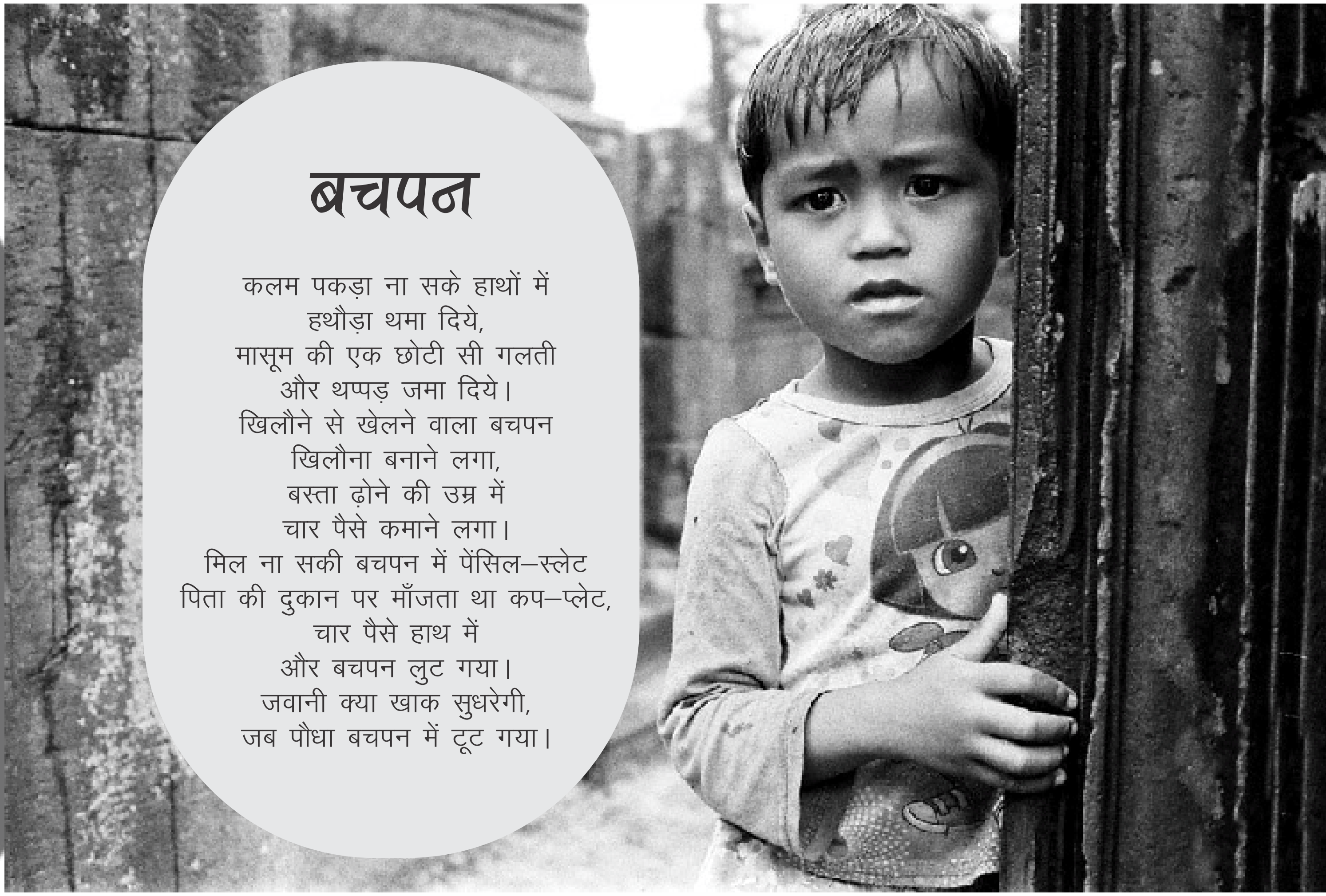

बचपन

कलम पकड़ा ना सके हाथों में
हथौड़ा थमा दिये,
मासूम की एक छोटी सी गलती
और थप्पड़ जमा दिये।
खिलौने से खेलने वाला बचपन
खिलौना बनाने लगा,
बस्ता ढ़ोने की उम्र में
चार पैसे कमाने लगा।
मिल ना सकी बचपन में पेंसिल–स्लेट
पिता की दुकान पर माँजता था कप–प्लेट,
चार पैसे हाथ में
और बचपन लुट गया।
जवानी क्या खाक सुधरेगी,
जब पौधा बचपन में टूट गया।

सीख

खुद को खोकर खुद को पा लूँगा
मेहनत के बल पे
जमी को आसमा बना दूँगा
चाँद तारे तो सभी तोड़ते है
मै सफलता तोड़ लाऊँगा
खुद को खोकर खुद को पा लूँगा
वक्त आने पे आसमान भी रोया करता है
लम्हा बीत जाने पे हर इंसान खोया करता है
जीवन का स्वर्ग वही बनाते है
जो दूसरे के राह के काँटों को हटाते है
सरहदें उनके लिए होती है
जो घर को अपना कहते है
जन्नत उनके लिए होती है
जो दूसरों का सहारा बनते हैं
आशाओं के साथ मैं हर पल गुलजार कर जाऊंगा
खुद को खोकर खुद को पा लूंगा
मेहनत के बल पे
एक मिसाल कायम कर जाऊँगा
खुद को खोकर खुद को पा लूँगा।

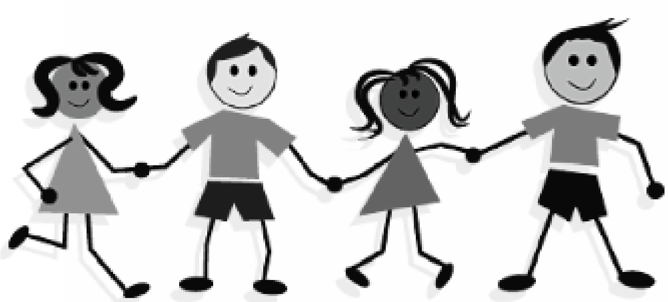

प्रखर पाण्डेय
कक्षा 11वीं 'ब'
Adm. No. – DPS-JC/1217

सोचा था ख्वाईशों के सहारे,
जिन्दगी जी लूँगा।
राहों के साथ बढ़ता चला जाऊँगा
उम्मीदों के चौखट पर
सपने सजा जाऊँगा
लेकिन ख्वाईशें मेरी रूठ गयी,
सारी दुनिया छूट गयी
राहें काटों से भर गयें
कदमें वही पर रूक गयें
एक चाह थी मेंरी कुछ नया करूँ
सबके सामने नही, सबके दिलो में रहूँ।
उम्मीदों की अधूरी कहानी
कभी ना कभी तो पूरी होगी
राहे खुद हमको नई जिंदगी देगी
फिर हम खुशी–खुशी
अपने ख्वाईशों के सहारे जी लेंगे
जिन सपनों को संजो कर रखे थे
वो कभी ना कभी तो पूरे होंगे।

यादें

एक छोटा सा संसार था मेरा,
जहाँ मेरी खुद की जिन्दगी थी।
जहाँ मैं किताबो के संग बाते किया करता था
जहाँ मेरे प्यारे नन्हे हाथों को
आशाओं के पर लगते थे
जहाँ आदमी की जगह दीपक जलते थे
एक छोटा सा संसार था मेरा
जहाँ अपनों का हाथ था
दूजो का साथ था
जिनके हाथ पे सर रख हम स्वप्न लोक में खोते थे
जिनकी एक लोरी पर ही हम सोते थे
सारी उम्मीद लेकर
निकल पड़ा उस राह पे
जिसे दुनिया वाले जिंदगी कहते हैं।
जिस दुनिया में अपने कम, पराये लोग रहते हैं
कहाँ गया वो संसार मेरा
जहाँ मैं अपने सपने संजोता था
गुम हो गयी उस काले अंधेरे में
जिसमें मैं सिर रखकर सोता था
आज भी उस पल को अपनी यादो में रखता हूँ
निकला था जो वचन देकर उन
वादो को आज भी पूरा करता हूँ।

प्रखर पाण्डेय
कक्षा 11वीं 'ब' साइंस
Adm. No. – DPS-JC/1217

शिक्षा का उद्देश्य

जिस प्रकार किसी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में नैतिक शिक्षा का बहुत बड़ा महत्व है, उसी प्रकार समाज व राष्ट्र की नीव भी नैतिक शिक्षा ही है। यदि किसी राष्ट्र को नष्ट करना है या समाप्त करना है तो राष्ट्र के राष्ट्रीय गौरव, राष्ट्रीय स्वाभिमान, संस्कृति एवं उसके इतिहास को विकृत कर दें। वह राष्ट्र अपने आप स्वयं समाप्त हो जायेगा। यूनान, मिश्र, रोम आदि इसलिये संसार से मिट गये क्योकि वहाँ के इतिहास को लोगों ने विकृत कर दिया। भारत के गौरवशाली एवं समृद्धशाली इतिहास को भी कुछ स्वदेशी व विदेशी विद्वानों, शिक्षाविदों एवं लेखकों ने जिनकी भारतीयता में रूचि नही थी, विकृत करने का प्रयास किया है और कर रहे हैं। भारत नष्ट तो नही हुआ लेकिन इतना अवश्य हुआ कि –

आदमी आदमी में इतना विष भर गया है,
कि विषधरों का वंश डर गया है।

दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति व परिस्थिति यह है कि जिनके हाथों में शिक्षा देने का प्रशासनिक उत्तरदायित्व है और जो शिक्षा से सम्बन्धित ऊंचे पदों पर आसीन हैं, उनमे से अधिकांश लोग ऐसे है कि –

''सुविधा पर बिके हुए लोग, कोहनी पर टिके हुए लोग।
करते हैं बरगद की बातें, गमले पर टिके हुए लोग।''

ऐसे लोगो से समाज व राष्ट्र के हित की चिन्ता करना निरर्थक है। अपने हित साधना के लिए इतिहास को विकृत करने के अतिरिक्त कर ही क्या सकते हैं? निरीह जनता को न्याय नही मिल पा रहा है, और समय इस प्रकार आ गया है कि–

''दौर वो आया है कि कातिल को सजा कोई नही।
हर सजा उसको जिसकी खता कोई नही।।''

इस संसार में सभी जैसे गाय, भैंस, घोड़ा व हाथी के बच्चे पूर्ण हो करके पैदा होते हैं। केवल मनुष्य का बच्चा अपूर्ण एवं असहाय पैदा होता है। इसलिए मनुष्य के बच्चे को –

कोख से गोद तक, गोद से गुरू तक
गुरू से समाज तक, समाज से राष्ट्र तक
राष्ट्र से विराट तक

की यात्रा करनी पड़ती है। मनुष्य को प्रेरित करना पड़ता है, कि तू मनुष्य बन, मनुष्य धर्म समझ, मनुष्य का दायित्व बोध प्राप्त कर। मनुष्य के अतिरिक्त सभी जड़ एवं चेतन अपने दायित्व को जन्म से समझते हैं और तदनुसार आचरण करते हैं। जैसे कुत्ते को यह नही कहना पड़ता है कि तू कुत्ता बन। अतएव शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि मनुष्य का बच्चा मनुष्य धर्म मनुष्य दायित्व मनुष्य के सद्कार्य ठीक प्रकार से जान व सीख सके।

विद्यार्थी शिक्षा के पवित्र मन्दिर में ज्ञान के लिए आता है, लेकिन शिक्षक अपने आचरण से, चरित्र से नैतिक मूल्यों से प्रमाणिकता से सद्वृत्तियों से एवं पढ़ाने के ढंग से विषय ज्ञान को देने के साथ ही विद्यार्थी को भारत की मिट्टी से जोड़ सकता है। विवेकानंद कभी विवेकानंद नही बन पाये होते यदि रामकृष्ण परमहंस जैसा गुरू नही मिला होता । विवेकानंद ने चालीस वर्ष की आयु में समाज व राष्ट्र के लिए जो सद्कार्य किया वह रामकृष्ण परमहंस जैसे गुरू की शिक्षा का प्रभाव ही था।

शीलवान मनुष्य को ही सुन्दर मनुष्य माना गया है। शील सुन्दरता से भी मूल्यवाल है। शीलभ्रष्ट मनुष्य केवल पाप ही नही करता, अपितु पापियों का पालन पोषण भी करता है। शील विहीन मनुष्य पशु बन जाता है, और मनुष्य का पशु बन जाना ही उसकी मृत्यु है।

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नही वह पशु निरा और मृतक समान है।।"

01. देश के लिए ऐसे नागरिक तैयार करें जो अपने राष्ट्र को जाने और समझे।
02. सामाजिक चेतना, सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय सुरक्षा का भाव पैदा हो।
03. राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का भाव पैदा हो।
04. अपने राष्ट्र के महापुरूषों के प्रति सम्मान का भाव पैदा हो। अतएव ऐसा इतिहास पढ़ाया जाना चाहिए जिसके माध्यम से इस प्रकार का भाव पैदा हो।
05. सर्वांगीण विकास हेतु प्रयास किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक सभी प्रकार से विकास हो, जिससे शिक्षा जगत का स्वस्थ्य एवं संस्कार मय वातावरण निर्मित किया जा सके।
06. विद्यार्थी के अन्दर तेज सूर्य का अमृत चंद्रमा का, ज्ञान शारदा की, शक्ति शिव की, नैतिकता बुद्ध की, त्याग दधीचि का, गुण राम के, नीति कृष्ण की, सेवा हनुमान की, प्रतिज्ञा प्रताप की, चरित्र शिवा का एवं आशीर्वाद गुरूजनो का प्राप्त हो।

शिक्षा की द्युति शिक्षक होता है, अतएव यदि शिक्षक अपनी प्रमाणिकता, ईमानदारी, निष्ठा एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण के भाव से ओत प्रोत होकर के विद्यार्थी को ज्ञानार्जन हेतु प्रेरित करता है तो वह राष्ट्र को सशक्त, वैभवशाली एवं उच्चतम शिखर तक ले जाने में सफल होगा। यदि शिक्षक कहने से डरेगा या हिम्मत नही रखेगा तो देश की समस्यायें पर्वताकार रूप धारण कर लेंगी।

प्रभुनारायण तिवारी
हिन्दी टी.जी.टी.

पिता

माँ घर का गौरव तो पिता से घर का अस्तित्व होता है।
माँ के पास अश्रुधारा तो पिता के पास संयम होता है।
दोनो समय का भोजन माँ बनाती है,
तो जीवन भर भोजन की व्यवस्था करने वाले पिता को सहज ही भूल जाते है।
कभी ठोकर या चोट लगने पर ओ माँ ही मुँह से निकलता है।
लेकिन रास्ता पार करते समय कोई ट्रक पास आकर ब्रेक लगाये तो,
बाप रे ही मुँह से निकलता है।
क्योंकि छोटे–छोटे संकटो के लिए माँ है,
पर बड़े संकट आने पर पिता ही याद आते हैं।
पिता एक वट वृक्ष है।
जिसकी शीतल छांया में सम्पूर्ण परिवार सुख से रहता है वो पिता है।

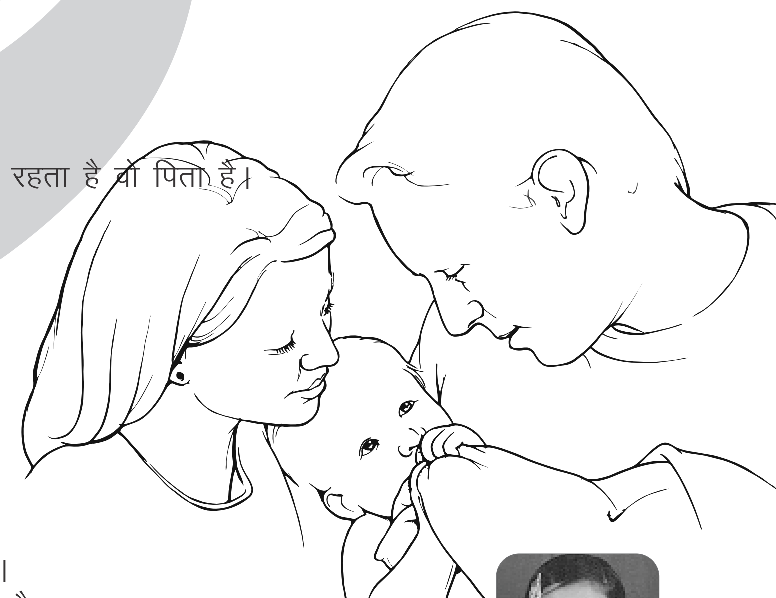

माँ

माँ जो जन्नत का फूल है,
प्यार करना उसका उसूल है,
दुनिया की मोहब्बत फिजूल है,
माँ की हर दुआ कबूल है,
माँ को नाराज करना इंसान तेरी भूल है।
माँ के कदमों की मिट्टी जन्नत की धूल है।।

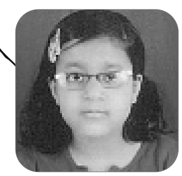

हिमानी सोनी
कक्षा 4वी 'ब'
Adm. No. DPS-JC/849

मेरा हिन्दुस्तान

हर किसी ने चोट मारी है
पर बिखरा नही है मेरा हिन्दुस्तान।
खलिस्तान की खलसाई ने,
पाकिस्तान की दुष्टाई ने,
चाहा तोड़ना मेरा स्वाभिमान।
पर बिखरा नही है मेरा हिदुस्तान
आतंकवाद के आतंक से,
साम्प्रदायिकता की ताकत से,
डरी नही मेंरी आन,
बिखरा नही मेरा हिन्दुस्तान।
कदम पर शोले बिछा के देखें,
चाहे अमेरिका या पाकिस्तान
सामने आ के देखे,
नही झुकेगी मेरी शान।
बिखरा नही मेरा हिदुस्तान।

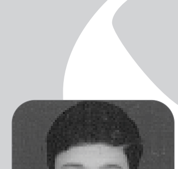

हरीश देवांगन
कक्षा 5वी 'ब'
Adm. No. DPS-JC/896

माँ की ममता

आँखे खोली पहली बार, तब सामने तुझे पाया।
जीवन आधार मिला तब, मुझको मेरी ममता की छाया।
ना कोई पहचान थी मेरी, ना कोई यहाँ अपनापन।
आया पहली बार यहाँ तब, पाया मैंने तेरा दर्शन।
असहनीय उस दर्द को सहकर , तूने मुझको जनम दिया।
आशीर्वाद वात्सल्य रूप में, देकर मुझे आबाद किया।
आते ही इस जग मे मेरा तू करूणा बरसाया।
करूणा के वरदान स्वरूप मै, तेरा आशीष पाया।
पकड़ के उंगली मुझे संभाला, तेरा अनुपम प्यारा।
जब–जब मैंने कष्ट पाया, हुआ कभी बीमार।
तेरी ममता और स्पर्श ही, बना मेरा उपचार।
तू ही मेरी देवी–देवता, तू ही मेरी पूजा।
माँ से बढ़कर इस दुनिया में और न कोई दूजा।
सदा ही तेरा गुण गाऊँ मै, पहुँचे मेरा शत–शत नमन्।
तेरी चरणों में न्यौछावर, हो मेरा तन, मन और जीवन।

हरीश देवांगन
कक्षा 5वी 'ब'
Adm. No. DPS-JC/896

समय का सदुपयोग

संसार में समय को सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान धन माना गया है। अतः हमें इस मूल्यवान धन अर्थात समय को व्यर्थ ही नष्ट नही करना चाहिए क्योकि बीता हुआ समय वापस नही लौट पाता । इसके विषय में एक कहावत प्रसिद्ध है–

''गया वक्त फिर हाथ आता नही
समय किसी की प्रतीक्षा करता नही''

समय का महत्व इस बात से भी स्पष्ट है यदि धन खो जाए वो पुनः कमाया जा सकता है। यदि स्वास्थ्य खो जाएं तो उसको भी प्राप्त कर सकते हैं परन्तु समय यदि एक बार हाथ से निकल जाये तो पुनः लौट कर नही आ सकता। जो व्यक्ति समय का सदुपयोग करते हैं, वे ही जीवन में सफल होते हैं।

समय के सदुपयोग की सबसे अच्छी विधि है प्रत्येक कार्य को करने के लिए उसके अनुकूल समय तय करना तथा समय के अनुकूल कार्य को निर्धारित करना। आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। आलसी मनुष्य कभी समय का सदुपयोग नही कर सकता। आलस्य उसकी उन्नति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा बन जाता है। आलस्य के कारण वह समय के महत्व को नही समझ पाता।

संसार मे जितने भी महापुरूष व मेघावी व्यक्ति हुए है उन्होंने अपने समय का बुद्धिमत्तापूर्वक सदुपयोग किया है। नेपोलियन का उदाहरण हमारे सम्मुख है। केवल पांच मिनट की देरी से युद्ध भूमि में पहुँचने के कारण वह पराजित हो गया तथा कैद कर लिया गया। अतः हमें अपने सभी कार्य समय पर ही करने चाहिए। आज का काम कल पर नही टालना चाहिए।

समय के सदुपयोग से मनुष्य के विचार गंभीर और पवित्र होते हैं। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम समय का पूरा–पूरा और उचित लाभ उठाएं। खेल के समय खेलें तथा पढ़ने के समय पढ़ें। समय के सदुपयोग से ही जीवन में सुख, शांति और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है तथा मनुष्य जीवन की ऊँचाइयों को छू लेता है।

''अगर आप अपने समय को बचाएंगे तो
आप अपनी जिन्दगी को सुरक्षित रख पाएँगे।

आयुव केशर देवाँगन
कक्षा 7वी 'ब'
Adm. No. DPS-JC/982

बचपन

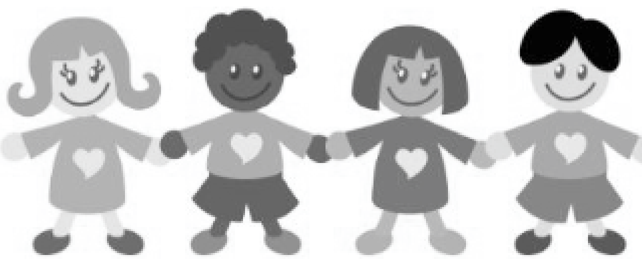

नन्हा प्यारा सा यह बचपन।
जीनव का एक टुकड़ा बचपन।।
नटखट नादानी का बचपन।
विद्या में जो डूबा तनमन।।
खेलकूद में गुजरा बचपन।
याद दिलाता है प्रति क्षण।।
रंग–रंगीली दुनियॉ में,
बीता है सुन्दर सा बचपन।।

आयुष सिंह
कक्षा 4वी 'ब'
Adm. No. DPS-JC/466

शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाए,
सही तरह चलना सिखलाए।
मात–पिता से पहले आता,
जीवन में सदा आदर पाता।
सबको मान प्रतिष्ठा जिससे,
सीखी कर्तव्य निष्ठा जिससे।
कभी रहा न दूर मैं जिससे,
वह मेरा पथ प्रदर्शक है जो।
मेरे मन को भाता,
वह मेरा शिक्षक कहलाता।
कभी है शांत, कभी है धीर,
स्वभाव में सदा गंभीर।
मन में दबी रहे ये इच्छा,
काश मैं उस जैसा बन पाता,
जो मेंरा शिक्षक कहलाता।

आयुष सिंह
कक्षा 4वी 'ब'
Adm. No. DPS-JC/466

जल प्रदूषण

जल को जीवन माना जाता है। जल के अभाव में जीव–समुदाय जीवित नही रह पाएगा। जल का उपयोग हम पीने, नहाने सिंचाई करने तथा साफ–सफाई में करते हैं। इन कार्यों के लिए हमें स्वच्छ जल की आवश्यकता होती है। लेकिन इन दिनों हमारे उपयोग का जल प्रदूषित हो गया है। जल में अनेक प्रकार के गंदे तत्व घुल मिल गए है। नालों की गंदगी, प्लास्टिक, सड़े–गले पदार्थ आदि मिलने से जल की गुणवत्ता में बहुत कमी आ गई है। गंदे जल में हानिकारक कीटाणु होते हैं जो हमारे स्वास्थ्य को क्षति पहुँचाते हैं। अतः हमे जल में हानिकारक पदार्थ मिलने से रोकना चाहिए। नदियों की सफाई का पूरा ध्यान रखना चाहिए। जल को अमृत कहा गया है इसलिए इसकी स्वच्छता को बनाए रखना हमारा कर्तव्य है।

आयुषी सिंह
कक्षा 8वी 'ब'
Adm. No. – DPS-JC/194

पिता का स्नेह

एक बहुत बड़े घर में 75 वर्षीय वृद्ध अपने 32 वर्षीय पुत्र के साथ बैठे थे। पुत्र बहुत बड़ा वैज्ञानिक था। वह अखबार पढ़ने में व्यस्त था। तभी कमरे के दरवाजे पर कुत्ता आकर बैठ गया। पिता ने पुत्र से पूछा ये क्या है? पुत्र ने कहा यह कुत्ता है। कुछ देर बाद फिर पूछा, ये क्या है? पुत्र ने कहा कुछ देर पहले ही तो मैंने आपको बताया था कि यह कुत्ता है।

थोड़ी देर बाद पिता ने पुत्र से फिर पूछा कि ये दरवाजे पर क्या बैठा है? इस बार पुत्र के चेहरे पर गुस्से के भाव आ गये। वह गुस्से से बोला यह कुत्ता है कुत्ता। पिता ने अपने पुत्र से चौथी बार पूछा – दरवाजे पर क्या बैठा है?

पुत्र पिता पर चिल्लाने लगा आप बार–बार मुझसे एक ही सवाल क्यों पूछ रहें है। चार बार मैने आपको बताया कि यह कुत्ता है। आपको इतना भी नही पता कि मैं अखबार पढ़ रहा हूँ।

पिता धीरे–धीरे अपने कमरे में गये और उन्होंने अपने साथ पुरानी डायरी लेकर आये और उसमें से एक पन्ना खोलकर अपने पुत्र को पढ़ने के लिए दे दिया। उस पन्ने में लिखा हुआ था कि –

आज मेरा चार साल का बेटा मेरी गोद में बैठा हुआ था। तभी दरवाजे पर एक कुत्ता आकर बैठ गया। उसे देखकर मेरे पुत्र ने मुझसे 30 बार पूछा पापा–पापा ये क्या है? मैने उसे 30 बार बताया कि बेटा वह कुत्ता है। हर बार वह मुझसे पूछता और हर बार मैं उसे प्यार से गले लगाकर बताता कि बेटा वह कुत्ता है। ऐसा मैने तीस बार बताया। इस लोक कथा से हमें यह सीख मिलती है कि एक पिता का स्नेह उसके पुत्र से लाखो गुना ज्यादा होता है।

वैभव मिश्रा
कक्षा 7वी 'अ'
Adm. No. DPS-JC/919

दोस्त हो तो ऐसा

जो हर गलत काम से पहले मारे हाथ,
बताए हमेशा सही बात।
जो तारीफ करते हुए न हिचकिचाए,
हमें अपनी गलतियाँ दिखाए।
अंक हमेशा अच्छे लाए,
हरदम हमें खुश देखना चाहे,
जिसने जीवन में न कभी गलत काम किए,
काश, हमारे अच्छे दोस्त सदियों तक जिएं।

आयुषी सिंह
कक्षा 8वी 'ब'
Adm. No. – DPS-JC/194

कुछ लम्हें यादों के

कुछ बातें भूली हुई,
कुछ पल बीते हुए।
और फिर सब के नजरों में आना।
परीक्षा के दिन पूरी रात जागना।
फिर भी सवाल देखकर सर चकराना।
मौका मिले तो क्लास से बंक मारना।
फिर दोस्तों के साथ घूमने जाना।
हर पल एक नया सपना सजाना।
रोज जो टूटे फिर भी अपनाना।
वो स्कूल के दिन याद कर,
जिन्दगी भर मुस्कुराना।

रितिक शुक्ला
कक्षा 11वी 'ब' साइंस
Adm. No.- DPS-JC/442

"मेरा बचपन कहाँ गया ?"

मेरा बचपन आखिर कहाँ गया?
मिट्टी से खेलता, हवाओं में बहता,
कहाँ आखिर समा गया?

ओस की बूँदो से नया सवेरा,
माँ का दिल, बसेरा था मेंरा
होठो पर हँसी, दिल पर जुनून,
ऐसा प्यारा था बचपन मेरा।

वो बचपन के पल लेकिन कहाँ अब समा गए,
इतने बड़े हो गए, हम नफरत के जहाँ में आ गए।
झूठी खुशियों के लिए, सच्ची खुशियाँ गवा गए,
अरे देखो हम किस नर्क में आ गए।

वो मधुर यादें बचपन की,
कहाँ गयी वो मस्त खुशी,
वो कागज की कस्ती, वो बहता सा पानी,
बरसात में वो कस्ती चलाना।

वो बचपन मुझे लौटा दो यारों,
वो धूलों से खेलना, वो कपड़ा भिगोना,
मम्मी का डाटना, पापा का सहलाना,
फिर से लौटा दो, वो बचपन सुहाना।

ये लोगों के झूठे चेहरे देखो,
प्यार करने की एक्टिंग देखो,
नहीं जीना मुझे इस झूठ के साथ,
दे दो मुझे वापस, मेरा बचपन दे दो।

साक्षी मोदी
कक्षा 11वी "अ" कामर्स
Adm. No. DPS-JC/519

चुटकुले

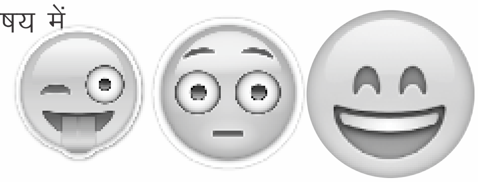

आयूष – तूने कभी इंग्लिश में पढ़ाई क्यो नहीं की?
पीयूष – विद्यालय में जब पहली बार पता चला कि साइकोलॉजी की स्पेलिंग सी या एस से नही, बल्कि पी से शुरू होती है, कसम से अंग्रेजी से भरोसा तो उसी दिन उठ गया।

आयूष (पीयूष से) – विद्यालय से मेरा परीक्षा परिणाम देखकर आना और बताना। घर पर माँ पिता जी साथ होंगे। एक विषय में अनुत्तीर्ण हुआ तो कहना – जय श्री कृष्ण और दो विषय में अनुत्तीर्ण हुआ तो कहना – जय श्रीराम, जय श्रीराम और अगर तीन विषय में अनुत्तीर्ण हुआ तो कहना – ब्रम्हा, विष्णु, महेश की जय हो।
पीयूष – विद्यालय से परिणाम देखकर आया तो बोला –
''बोल सांचे दरबार की जय।''

पिता अपने पुत्र को डाँटते हुए कह रहे थे,
''बेटा चीन में 15 साल के बच्चे भी अपने पैरों पर खड़े हो जाते है।
पुत्र – इसमें कौन सी नई बात है। हमारे भारत में तो एक साल में बच्चा भागने ही लगता है।

(जिंदगी हँसकर बिताना चाहिए, चुटकुले सुनना सुनाना चाहिए)

आयुष देवांगन
कक्षा 8वी 'अ'
Adm. No. DPS-JC/373

बेटा सुधर जा

बेटा विनती थी कल सुधर जाता
माँ के आँचल से निकलते ही
क्यों हवा हो गया?
बेटा तब भी वक्त था आज भी वक्त है
बेटा सुधर जा।।
बेटा जरूरी है आज सुधर जा
क्यों हो गया हमसे जुदा
याद तेरी आती है कहाँ गुम हो गया
बेटा अब तो सुधर जा।।

बेटा कामना थी कल सुधरेगा
दुनिया गोल है कहाँ–कहाँ घूमेगा
माँ के आँचल में, पिता की छाँव में
बेटा अब तो सुधर जा।।

बेटा पक्का ही था कि अब सुधरेगा
समय ताकता रहा कि कब पेड़ का पत्ता सूखेगा
बेटा मेरे हाथ तरस गए गले लगाने को
बेटा अब तो सुधर जा।।

डर से मत डर

डर से ना डर ऐ मानव,
समझ ले इसे चुनौती, या फिर दानव।
जीवन रूपी नइया में होके सवार,
कर ही लेगा तू ये भवसागर पार।।

डर से ना डर ऐ मानव,
क्यो न हो जाए तेरे समक्ष शिव का तांडव।
जीवन तो है कठिनाइयों का आदान प्रदान
पुण्य तो तभी तुझे मिलेगा, जब होगा तुझसे
कोई बड़ा दानव।।

डर से ना डर ऐ मानव
चाहे क्यों न खा जाए तुझे मौत रूपी दानव।
जीना और मरना तो है सिर्फ तकदीर का खेल,
चलाते जाओ जब तक चले,
हमारी यह जीवन रूपी रेल।।

दीपक कुमार साहू
कक्षा 11वी 'ब' साइंस
Adm. No. DPS-JC/116

"एकता"

नील गगन के तले।
हम सब मिलके चले।।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई।
सब मिलते हैं गले।।
नील गगन के तले।
देश हमारा धरती अपनी।।
इसको लगाये गले।
इस छतरी के नीचे हम सब,
देश भक्ति के गीत गाते चले।।

इप्शिता तिवारी
कक्षा 2 'ब'
Adm. No. DPS-JC/046

अब भी बाकी

हर रोज कितने घायल होते,
और कितनी जाने जाती हैं।
पर आज भी हम सब में,
मानवता अब भी बाकी है।।

दर्द जो इतना दिया तूमने,
जिससे कितनी मुस्काने घबरा जाती हैं।
पर आज भी उस घबराहट के पीछे,
एक नई उम्मीद अब भी बाकी हैं।।

गोलियों और विस्फोटों की आवाज से,
रूह काँप उठ जाती है।
और नही रहेगा दशहत और हैवानियत से,
न जाने कितनी ही आँखे झुक जाती है।
पर हर उस झुकी आँख को देख,
एक बंद आँख खुल जाती है।
और आज भी हर आँखो में
बदलाव की किरणें अब भी बाकी है।।

जंग और युद्ध आज भी जारी है
बाणों और तलवारों की जगह बंदूको की आई बारी है।
युद्ध के महासंग्राम में कितनी ही मौते हो जाती हैं।
पर आज भी हर युद्ध में शांति अब भी बाकी है।।

बंदूको की नोक में तुमने फूलों को
मुरझा दिया तो क्या हुआ
उन फूलों में खूशबू अब भी बाकी है।।

प्रणय गुप्ता
कक्षा 11वी 'ब' साइंस
Adm. No. DPS-JC/276

मेरा एक अलग आशियाना

कभी इस बड़ी सी दुनिया में
मेरा छोटा से एक आशियाना था
पर आज उन चार दिवारों के बिना
इस छोटी सी दुनिया में
मेरा एक बड़ा सा आशियाना है।

क्यूँ ये आशियाना बड़ा है?
चलो मैं आज तुमको बतलाऊँ
मैं किस नजरिये के साथ जीता हूँ?
चलो मैं तुमको दिखलाऊँ।

पहले ऊपर छत थी,
जिससे बूंदे टपकती थी।
आज ऊपर आसमान है,
जिससे परमात्मा अमृत बरसाता है।
पहले चारो दिवार, एक दूसरे को निहारती थी,
पर आज मीलों दूर आ गया,
फिर भी, एक दिवार भी मुझे ना मिली।

पहले अंधेरे में रोशनी लाने को,
बल्ब छोटी पड़ जाती थी।
आज जब बड़ा सा चाँद उभर कर निकलता है,
तब पूरी धरा रात की खुशियाँ मनाती है।

पहले चार दिवारी के अंदर,
रोज कहा – सुनी होती थी।
पर आज की इस भीड़ में,
सब अकेले ही चलते हैं।
पर एक बात हैं...
लोग चलते चलते
दूसरे को गिराने की कोशिश करते हैं।

शायद मेरा नजरिया सही है
कि इस बड़ी सी दुनिया में
मैं खुश हूँ।
भले मैं भीड़ में खड़ा यह कह रहा।
पर शायद इस नजरिये से सिर्फ मैं अकेले ही जी रहा।

प्रकाश साहू,
कक्षा 11वी 'ब', साइंस
Adm. No. DPS-JC/774

प्रयास करके देखो

थम गया है ये जहाँ,
रूक गया है ये समां
धरती को चलाना अगर हो,
एक कदम आगे बढ़ा के देखो।

हैवानियत के घृणित हाथों ने,
नष्ट की कितनी आँखे,
मानवता की दृष्टि जगाना हो
तो अपनी आँखे खोल के देखो।

काम बड़ा करना चाहते हो,
आसमान छूना चाहते हो।
कितनी छोटी सी ही क्यों,
एक छलांग लगा के देखो।

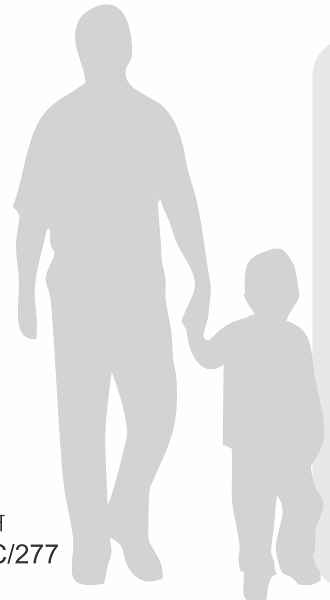

प्रतीक गुप्ता
कक्षा 11वी 'ब' साइंस
Adm. No. DPS-JC/277

दुनिया में मचा हाहाकार हो,
हो रहा नरसंहार हो।
शांत दुनिया को करना हो,
तो अपनी चुप्पी त्याग के देखो।

सपना देखते कितना बड़ा हो,
पूरा हर सपना करना चाहते हो।
तो नींद में डूबे तुम क्यों हो
एक बार निद्रा त्याग के देखो।

काम कितना ही बड़ा हो,
लक्ष्य दूर कितना ही हो।
दुनिया में असंभव कुछ भी नहीं,
एक बार प्रयास करके तो देखो।

अनुशासन दो शब्दों से मिलकर बना है। अनु+शासन अर्थात् शासन के पीछे चलना। देश, समाज, संस्था आदि के नियमो के अनुसार चलना अनुशासन कहलाता है। अनुशासन के बिना राष्ट्र बिना पतवार की नौका के समान डगमगाने लगता है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुशासन का महत्व है। अनुशासन से धैर्य और समझदारी का विकास होता है। समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है। क्या घर, क्या स्कूल, क्या सामाजिक जीवन अथवा सेवा में सभी जगह अनुशासन की आवश्यकता होती है।

माता–पिता यदि अपने बच्चे को घर पर ही अनुशासन में रहने की शिक्षा दे तो वह शीघ्र ही समाज में भी अपना स्थान बना सकता है। जिस घर में अनुशासन न हो वहाँ कभी शान्ति नही हो सकती। इसी प्रकार स्कूलों, कॉलेजों में अनुशासन अनिवार्य है जिस विद्यालय में अनुशासन का अभाव हो उसके छात्र कभी भी चरित्रवान नहीं हो सकते।

खुशी सिंघानियां
कक्षा 8वी 'अ'
Adm. No. – DPS-JC/137

चुटकुलें

01. एक चोर रमेश का मोबाइल लेकर भाग गया।
रमेंश जोर–जोर से हँसने लगा।
सुरेश भागने दो, चार्जर मेरे पास है।

02. टीचर – बताओ बच्चों, जंगल में जानवर किससे डरते हैं।
चिन्टू – जंगल के राजा शेर से।
टीचर – और शेर किससे डरता है।
चिन्टू – सर, शेरनी से डरता है।

03. टीचर–20 में से केवल 5 नंबर आने पर भी तुम हँस रही हो?
विक्की–मैं यह सोचकर हँस रहा हूँ कि यह नंबर भी कैसे आ गए।

नेहा शर्मा
कक्षा 9वीं 'अ'
Adm. No. – DPS-JC/830

गाँव हमारा हैं अच्छा

दुनिया के हर शहर नगर से, गाँव हमारा है अच्छा।
अम्मा रोज सुबह उठकर, गइया को देती चारा।
दादी संग मिठ्ठू तोता भी, गाता हैं प्रभु का गाना।
हल बैलों के संग खेतों में जाते है रामू चाचा।
दुनिया के हर शहर नगर से गाँव हमारा है अच्छा।
बड़े सबेरे बगीचा में चिड़िया ची–ची कर गाती है।
लहरे नहरों की कल–कल कर मधुरित गीत सुनाती है।
खूब कुलांचे मार दौड़ता गइया का नन्हा बच्चा।
दुनिया के हर शहर नगर से, गाँव हमारा है अच्छा।
बकरी मुर्गी के बच्चे सब क्यारी के गेंदा गुलाब भी,
मन मोहक लगता तुलसी संग लिपा–पुता अंगना कच्चा।
दुनिया के हर शहर नगर से गाँव हमारा है अच्छा।

आर्या गुप्ता
कक्षा 6वी 'अ'
Adm. No. – DPS-JC/806

तारे नही पधारे

चिनू के घर रात पेड़ पर नभ से उतरे तारे।
चिनू जी का मन हर्षाया तब अचरज के मारे।
चिनू राजा खुश होकर के जोरो से चिल्लाएं।
मम्मी देखो आज धरा पर तारें नभ से आए।
मम्मी आई दौड़ी–दौड़ी देखे इतने तारें।
हंसते–हंसते मम्मी बोली मेरे चिनू प्यारें।
आसमान से इस धरती पर तारें नही पधारे।
चमक रहे है झिलमिल–झिलमिल जुगनू इतने सारे।

आर्या गुप्ता
कक्षा 6वी 'अ'
Adm. No. – DPS-JC/806

उम्मीद एक नयी सोंच

आज मैं अपने घर से निकल कर उस सूने राह की ओर निकल पड़ा जहाँ तारें टिम–टिम करते हुए मेरे साथ चल रहे थे, जहाँ चाँद अपनी चाँदनी बिखेरता हुआ ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो एक माँ अपने बच्चो को प्यार से पुकार रही हो। मैं उस राह पे आगे चलता गया फिर अचानक मेरे कदम वहीं पर रूक गये, वहाँ एक कोने पे एक बच्चा अपने आप को गम में समेटे हुए बिलख–बिलख कर रो रहा था। मैंने उससे पूछा कि उसके रोने की वजह क्या थी, फिर उस बालक ने कहा कि – माँ बोला करती थी कि 'जब तुम गहरी नींद में सो जाओगे तो एक फरिश्ता आएगा और तुम्हे खाना खिला जायेगा।' मैं आज भी उन शब्दों को, उन लम्हो को याद कर रो पड़ता हूँ जो उस 6 वर्ष के बालक ने मुझसें कहा था जिसने अपनी उम्मीद ना हारी और उस फरिश्ते की आस लेकर जी रहा था। शायद मैं उसके लिए नहीं वो मेरे लिए एक फरिश्ता था, जो उन 16 शब्दों में मुझे सही राह दे गया जिस वाक्य को समझने में व्यक्ति पूरी जिंदगी बिता देतें है वो उस बालक की बखूबी समझ थी। आज 14 साल बीत गये उस बालक की याद में, फिर प्रकृति मुझपे मेहरबान हुई और वो बालक मुझे फिर से मिला बस फर्क था तो सिर्फ एक, आज वो अर्धनग्न नही था आज वो काले कपड़े में, हाथ में किताबे लिए सिर पर काले रंग की पगड़ी पहने मेरे सामने था। मेरी हल्की सी नजर उसके कोट पर लगे नाम पर पड़ी उसमें न्यायधीश का टैग लगा हुआ था और वो मुझे देखते ही गले लगाकर बाहों मे भर लिया और उसने कहा कि '' आपके उस एक रोटी के निवाले की बदौलत मैं यहाँ तक पहुँच पाया हूँ, जिस दिन आपने मुझे खिलाया था उसी दिन से मै अपने लिए नही इंसानियत के लिए लड़ रहा हूँ। मेरी आंखे भर आयी मैनें उसे दुआएँ दी और खिले मन से चला गया सारी राह ये सोंचता रहा कि मैंने अपने इंसान होने का फर्ज पूर्ण कर दिया। मानव जाति में आज भी इंसानियत है जो सभी का कल्याण कर देगी। आज भी उम्मीद पे दुनिया कायम है।

प्रखर पाण्डे
कक्षा 11वीं 'ब' साइंस
Adm. No. – DPS-JC/1217

भोर की पहली किरण है बेटियाँ,
रोशनी का व्याकरण हैं बेटियाँ।
जिसने अपनाया वो पावन हो गया,
शुद्ध, निर्मल आचरण है बेटियाँ।
देवियों का पुनर्जन्म मानिए,
माँ का सुखद अवतरण हैं बेटियाँ।
सूत्र शुचिता के लिखे जिस ग्रंथ में,
उसका शोभित आवरण हैं बेटियाँ।
मान, मर्यादा, क्षमा और शील का,
करती आई अनुसरण है बेटियाँ।

आलेख अग्रवाल
कक्षा 5वी 'अ'
Adm. No. – DPS-JC/979

बच्चों की फुलवारी

डी. पी. एस. स्कूल है हमारा, बच्चों की फुलवारी ।
शिक्षक–शिक्षिकाएँ इसके माली, हर कक्षाएँ क्यारी ।।
हर क्यारी की हम हर बच्चे, लगते है गुलाब केंवरा।
रात–रानी , जूही, चमेली, दौना, चंपा, मोंगरा ।।
विद्या की खुशबू आती है, लगती है हमें प्यारी ।
डी. पी. एस. स्कूल है हमारा, बच्चों की फुलवारी।।
शिक्षा की पानी से, सींचते रहते गुरूजन माली ।
स्नेह, प्यार की खाद डालकर, मजबूत करते डगाली ।।
न जाने कितने उपजे, जग से है ये न्यारी ।
डी. पी. एस. स्कूल है हमारा, बच्चों की फुलवारी।।

हिमांशु साहू
कक्षा – 6वीं ''ब''
Add. No. DPS-JC/1095